एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–02

(आधुनिक हिंदी काव्य)

सत्रीय कार्य (जुलाई–2023 और जनवरी–2024) सत्रों के लिए

जुलाई–2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2024

जनवरी–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2024

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

एम.एच.डी.–02 : आधुनिक हिंदी काव्य
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–02 / एम.एच.डी
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–02 / टी.एम.ए. / 2023–24

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **कुल अंक**

1. समाज सुधार की दृष्टि से भारतेंदु की कविताओं के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 16

2. ''उर्मिला जी को गुप्त जी ने पुनःजीवित किया है'' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

3. ''वेदना महादेवी के काव्य का स्थायी भाव है।'' इस कथन की व्याख्या करें। 16

4. दिनकर के काव्य में सौंदर्य और प्रेम का स्वर मुखरित हुआ है, सोदाहरण विवेचना कीजिए। 16

5. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) रोवहु सब मिलि के आवहु भारत भाई। 12
हा ! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।
सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।।
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो।
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो।।
अब सबके पीछे सोई परत लखाई।
हा ! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

(ख) दुःख की पिछली रजनी बीच 12
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल;

(ग) हमारे निज सुख, दुख निःश्वास 12
तुम्हें केवल परिहास,
तुम्हारी ही विधि पर विश्वास
हमारा चिार आश्वास
आये अनंत हृत्कंप ! तुम्हारा अविरत स्पंदन
सृष्टि शिराओं में सञ्चारित करता जीवन;
खोल जगत के शत-शत नक्षत्रों-से लोचन
भेदन करते अहंकार तुम जग का क्षण-क्षण
सत्य तुम्हारी राज यष्टि, सम्मुख नत त्रिभुवन,
भूप अकिंचन,
अटल शास्ति नित करते पालन !